ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March (Supplementary Issue)-2018
Innovation The Research Concept

भीष्म साहनी की रचनाओं में जीवन दर्शन की विविधताएँ

प्रवीन कुमारी
शोध छात्रा,
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,
हिन्दी प्रचार सभा,
मद्रास, चेन्नई

सारांश

सार रूप में कहा जा सकता है कि भीष्म साहनी ने अपनी रचनाओं में बखुबी तौर पर जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है अगर हम भीष्म के उपन्यासों, कहानियों अथवा नाटक की चर्चा करें तो उनकी प्रत्येक रचना में सामाजिक विविधता, आर्थिक विविधता, राजनीतिक विविधता, धार्मिक विविधता, सांस्कृतिक विविधता आदि को देखा जा सकता है। अतः निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि भीष्म साहनी जी का साहित्य लेखन तत्कालीन समाज में व्याप्त मानव जीवन शैली की विविधताओं का वर्णन करता है।

मुख्य शब्द : विविधता, कुण्ठा, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक।

प्रस्तावना

मनुष्य का जीवन विविधताओं से भरा हुआ है। जैसे, सामाजिक विविधताएं, राजनीतिक विविधताएं, धार्मिक विविधताएं, आर्थिक विविधताएं, सांस्कृतिक विविधताएं आदि।

इन सभी विविधताओं पर भीष्म साहनी जी अपनी पैनी नजर रखते है इन विविधताओं का मनुष्य के जीवन और समाज पर क्या असर पड़ता है उसको बखूबी अपने साहित्य में चित्रित करते है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र के माध्यम से हम क्रम अनुसार इन विविधताओं पर प्रकाश डालेगें।

सामाजिक विविधता

भीष्म साहनी जी के साहित्य की संरचना में युगीन सामाजिक विविधताएँ चित्रित होती है। वे समकालीन जीवन की असंगतियों, विसंगतियों एवं विषमताओं को अपने कथा साहित्य का आधार बनाते हैं। भीष्म साहनी जी की रचनाओं में सामान्य लोगों के जीवन की तमाम विविधताएं घटनाएं चित्रित है। उसमें इन लोगों की जिजीविषा है, जीवन संघर्ष है, कुंठा है, हताशा है और निराशा है, उनका व्यापक दुख और पीड़ा है, उनके सपने और आदर्श है। यह कहना उचित होगा कि भीष्म जी की रचनाएं जीवन की बहुआयामी तस्वीर हैं, दिलचस्प ब्यान हैं, सुख–दुख का आख्यान हैं। जीवन की हर छोटी–छोटी बात का चित्रण उनके कथा साहित्य में मिलता है। खान–पान, प्रेम, हंसी, निराशा, कुंठा, राग–द्वेष, संघर्ष, संकल्प, जीत और हार सबका चित्रण वे करते हैं। इन्ही बातों से हमारा जीवन रूचिकर बना है। यह सारे अनुभव हमें जीवन का अहसास कराते हैं। इन्हीं से हम जीवन को महसूस करते है। भीष्म जी की रचनाएं भी इन्ही अनुभवों की तरह जीवित रहने का अहसास कराती हैं। वह हमें खुश व संतृप्त करती है। वे हमें समाज से जोड़ती है। वस्तुतः हर छोटी–बड़ी बात अपनी लगती हैं। जीवन से प्यार करने वाला लेखक ही ऐसी रचनाएं लिख सकता है। जीवन से वास्तविक प्यार ही हमें स्वयं अपने से और जीवन से जोड़ने का काम करता है।[1]

लेखक भीष्म साहनी जिस युग में कथा लेखन कर रहे थे उस समय देश का सामाजिक, राजनैतिक जीवन गहरे उतार–चढ़ाव के दौर से गुजर रहा था देश में अराजकतावादी तत्त्व सक्रिय थे देश मुक्ति के लिए छटापटा रहा था सामाजिक जीवन राजा राम मोहन राय स्वामी दयानन्द गोविन्द रानाडे ऐसी बेसेन्ट जैसे समाज सुधारको के चिन्तन से प्रभावित था[2] शराब बंदी, बाल विवाह, बेमेल विवाह, नारी चेतना, विधवा विवाह, अस्पृष्यता जैसी समस्याये देश और समाज को प्रभावित कर रही थी इन सब स्थितियों को प्रभाव भीष्म जी की रचना दृष्टि पर पड़ना स्वाभाविक था वे स्वीकार करते है कि तरह–तरह के अनुभव तरह–तरह की घटनाएं आपसी रिश्ते मानव समाज के भीतर चलने वाले संघर्ष विसगतियाँ और अर्न्तविरोध, बिडम्बनाएं सभी कुछ जीवन की परिधि में आते है ये सब घटनाएं लेखक के संवेदन को छूते है। उद्वेलित करती है। इन्ही

से लेखक की सवेंदना को अभिव्यक्ति की दिशा मिलती है। लेखक के लिए सामाजिक जीवन ही सर्वोपरि है और मनुष्य अकेला भी नही है। वह समाज का अनिवार्य अंग है। मनुष्य को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखने से हम अधिक स्पष्ट और वैज्ञानिकता पूर्ण दृष्टि विकसित कर सकते है लेखक जीवन की परतों को हमारे सामने खोलता है। और सोचने समझने की मदद करता है वह हमें सजग और सटीक बनाता है। साहित्य अपनी सामाजिक भूमिका का निर्वाह करता है। जहाँ तक साहित्य द्वारा सामाजिक परिवर्तन लाने का सवाल है यह प्रक्रिया बहुत जटिल और धीमी है। पाठक धीरे–धीरे सामाजिक स्थिति के प्रति सचेत होते है। उन्हें जिन्दगी को देखने समझने अपनी स्थिति को देखने समझने और विश्लेषण करने का नजरिया मिलता है। बाद में वह सामाजिक स्तर पर ही रहे बदलावों को समझने लगता है।[3]

सामाजिक अनुभव और सामाजिक परिस्थितियों की विषमता और संगति भीष्म जी का सजनात्मक प्रेरणा का प्रमुख कारक है। सामाजिक अनुभवों को भीष्म की सजनात्मक धरोहर मानते है। वे स्वीकारते है। कि साहित्य के क्षेत्र में मेरे अनुभव स्पष्ट और सीधे सादे रहे है। जैसे कि जीवन के मैं समझता हूँ वैसे ही रचनाएं भी रख पाऊगां। मेरे संस्कार मेरे अनुभव मेरा व्यक्तित्त्व मेरी दृष्टि सभी मिलकर रचना की सृष्टि करते है। इनमें से एक भी झूठा हो तो सारी रचना झूठी पड़ जाती है।[4] वे साहित्य सृजन के सम्बन्ध में सामाजिक चेतना से जुड़ाव को आवश्यक मानते है। वह रचना प्रक्रिया का अनिवार्य अंग होती है। साहित्य जितना आत्मकेन्द्रित होगा तो वह सामाजिक जीवन उसकी विषमताएं सृजन का आधार न बनकर अवचेतन व्यक्तित्त्व कुंठा प्रवृत्तियां साहित्य का विषय बन जाती है। साहित्य का सृजन व्यक्ति ही करता है। जीवन के प्रति उसकी दृष्टि में उसकी निजी प्राथमिकता और निजी विशिष्टताएं लक्षित होती है। रचनाकार के सृजन में जीवन बोलता है। जीवन का यथार्थ प्रमाणिक ढंग से व्यक्त होता है। व्यक्ति का अनुभव सार्वजनिक अनुभव का रूप लेकर जीवन का प्रतीक बन जाता है। इस स्तर पर व्यक्तिगत और सामाजिक चेतना एक हो जाती है। जहाँ ऐसा नहीं हो पाता है। वहाँ टकराव की स्थिति बनी रहती है।[5]

राजनीतिक विविधता

उन्नसवी शताब्दी संसार के इतिहास को नई दिशा देने वाली शताब्दी है। इसी शताब्दी में राष्ट्रीयता का विकास भारत के लिए नई घटना थी। [6] 1918 में राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म स्वरूप महत्वपूर्ण घटनाओं में गिना जाता है। 1906 के बाद जीवन में जागृति और नयी दृष्टि का प्रभाव देश के इस छोर से उस छोर तक फैल रहा था, उसका मूल कारण अंग्रेजी दासता थी [7] नवीन अन्तराष्ट्रीय परिस्थितियों, रूसी क्रांति की सफलता ने अंग्रेजों को नए तरीके से सोचने तथा देश के बारे में नई नीति बनाने के लिए विवश कर दिया था। 1917 में हुए जलियांवाला बाग के गोली कांड़ से अंग्रेजी की नृशंसता सामने आई थी। महात्मा गाँधी ने इस खून खराबे का विरोध किया। उन्होंनें अहिंसा, अवमानना तथा असहयोग की प्रक्रिया तथा सत्याग्रह की नीति को अपनाया। तत्कालीन राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में दो प्रकार की विचारधाराएं काम कर रही थी। गाँधीवादी विचारधारा तथा समाजवादी विचारधारा। द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका में कम्युनिष्ट पार्टी बिना किसी शर्त के मित्र राष्ट्रों की सहायता करने की इच्छुक थी। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति में व्याप्त, अराजकता, असंतोष, बिखराव, भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद, लाल फीताशाही आदि जो कुछ आया था–वह सब भीष्म की अनुभव परिधि में समाहित है। राजनीति परिवेश में व्याप्त कर्तव्यनिष्ठा और जनहित के स्थान पर स्वार्थपरता और शोषण का चित्रण भीष्म साहनी के कथा साहित्य का प्रमुख आधार है।

धार्मिक विविधता

भारतीय समाज मूलतः धर्म बद्ध समाज है। प्राचीन काल में अब तक धर्म का गहरा प्रभाव हमारे समाज पर रहा है। इन्हीं मान्यताओं का गहरा प्रभाव समाज पर रहा है। वर्ण व्यवस्था की पतनोन्मुख व्यवस्था व्यक्ति से लड़ाती रही है। हमारे रीति–रिवाज, संस्कार, खान–पान,शादी–विवाह के बंधन बहुत अधिक है। अशिक्षा के कारण अविश्वास गहरी जड़ जमाये हुए है। हिन्दू समाज का सामाजिक, आर्थिक ढाँचा और जीवन, धार्मिक कट्टरता, पिछड़ेपन, असहिष्णुता के कारण जर्जर हो रहा है। धर्म की परम्परागत बुराई को यथावत स्वीकार करने वाला हिन्दू समाज परिवर्तन को स्वीकार नहीं करता है। हमारे समाज में रूढ़िवादी तथा धार्मिक अंधविश्वासों से मुक्ति के प्रयत्न नहीं हुए। भीष्म जी के साहित्य में धर्म के इस स्वरूप की आलोचना हुई है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में धर्म के प्रति विविध देखने को मिलता है। भीष्म साहनी के साहित्य में समाज खोखली विषाक्त और अस्वस्थ धर्म व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी देश छुआ–छूत, वर्ग भावना, जाति–पाति, ऊँच–नीच तथा संकीर्ण भावनाओं से ग्रस्त है। यह समाज अपनी मुक्ति की कामना के लिए आज भी प्रयासरत है।

आर्थिक विविधता

मनुष्य के जीवन को प्रभावित करने शक्तियों में अर्थ का गहरा प्रभाव रहा है। आर्थिक संघर्ष मनुष्य जीवन की हर स्थिति को बदल देता है। 1857 से 1918 तक का समय अंग्रेजों द्वारा भारत के शोषण का प्रथम चरण है। औद्योगीकरण से कृषि तथा भारतीय उद्योग–धन्धे, कुटीर उद्योग समाप्त होने लगे थे। विदेशी मशीनों से बनी वस्तुओं का यह प्रभाव हुआ कि भारतीय अर्थव्यवस्था धीरे–धीरे समाप्त होने लगी। इस शताब्दी में भयंकर अकाल पड़े। जमीदार, मिल–मालिक तथा समाज के सम्पन्न लोग शोषक हो गए। किसान तथा मजदूरों की स्थिति का प्रभाव यह पड़ा है कि भारत की परम्परागत ग्रामीण कृषि व्यवस्था और आत्म निर्भरता समाप्त हो गई। अंग्रेजी शोषण को समाप्त करने के लिए स्वदेशी–आन्दोलन आरम्भ किए गए। स्वतंत्रता पूर्ण भारत की आर्थिक परिस्थिति और परिवेश का वर्णन हिन्दी कथा साहित्य में विस्तार से किया गया है।

सांस्कृतिक विविधता

अन्य प्रवृत्तियों की तरह संस्कृति भी मानव समाज के विकास को प्रभावित करती है। मनुष्य के लिए

उसकी संस्कृति धरोहर की तरह होती है। किसी भी कीमत पर वह इसे खोना नहीं चाहता। संस्कृति का सम्बन्ध मानव के मानसिक स्तर से होता है। भारतीय संस्कृति को दो भागों में बांटा जा सकता है। संस्कृति का एक भाग सामाजिक आदर्शों पर आधारित होता है। दूसरा भाग अपने स्वरूप में सार्वभौमिक होता है। संस्कृति का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है। संस्कृति का सम्बन्ध मानव प्रगति और मानव सभ्यता से जोड़ा जाता है। हमें पश्चिमी आधुनिकीकरण के स्थान पर भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों तथा आदर्शों की स्थापना और प्रतिष्ठा को महत्व देना चाहिए।

निष्कर्ष

1919 से 1936 के माध्य कई नई सांस्कृतिक दृष्टिकोण और विचारधाराओं ने भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया। बीसवी शताब्दी में भारतीय संस्कृति में नई मानवतावादी भावना का पुनः उदय हुआ मानवतावादी दृष्टिकोण क्रमशः प्रखर होता गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *भीष्म साहनीः व्यक्ति और रचना, अमरकांत का निबंध, पृ0सं0 250*
2. *के0सी0 व्यास–द सोशियल रिनेसां इन इंड़िया, पृ0सं0 43*
3. *भीष्म साहनीः व्यक्ति और रचना, असगर वजाहत–बातचीत एक, पृ0सं0 110*
4. *सरिका, अप्रैल, 1973 अंक, पृ0सं0 33*
5. *राजेन्द्र सक्सेना, मधुमति, अक्टूबर, 1982 अंक, पृ0सं0 29*
6. *हजारी प्रसाद द्विवेदी–हिन्दी साहित्य, पृ0सं0 256*
7. *पट्‌टामि सीताराम–कांग्रेस का इतिहास, पृ0सं0 110*